RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 12th | HISTORY

ARJUN BATCH

बंधुत्व जाति तथा वर्ग

Chapter-3 | Part-4



आज क्या पढेंगे ?

1. चार वर्णों से परे: एकीकरण
2. जन्म के परे
3. एक धनाढ्य शुद्र

वर्ण कर्म ✓

↓

जन्म ✗



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चार वर्णों से परे : एकीकरण

- उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली विभिन्नताओं की वजह से यहां हमेशा से ऐसे समुदाय रहे हैं जिन पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
- संस्कृत साहित्य में जब ऐसे समुदायों का उल्लेख होता है तो उन्हें विचित्र, असभ्य और पशुवत चित्रित किया जाता है।
- ऐसे कुछ उदाहरण वन प्रांतर में बसने वाले लोगों के हैं जिनके लिए शिकार और कंद मूल संग्रह करना जीवन निर्वाह का महत्वपूर्ण साधन था।
- निषाद वर्ग जिसका एकलव्य माना जाता था इसी का उदाहरण है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यायावर पशुपालकों के समुदाय को भी शंका की दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि उन्हें कृषि कर्मियों के सांचे में नहीं ढाला जा सकता था।
- असंस्कृत भाषी लोगों को मलेच्छ कहकर हेय-दृष्टि से देखा जाता था।
- यद्यपि इन लोगों के बीच विचारों और मतों का आदान-प्रदान होता था। उनके संबंधों के स्वरूप के बारे में हमें महाभारत की कथा से ज्ञात होता है।


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बाघ सदृश्य पति



यह सारांश महाभारत के आदिपर्वन से उद्धृत कहानी का है।

पांडव गहन वन में चले गये थे। थक कर वे सो गये। केवल द्वितीय पांडव भीम जो अपने बल के लिए प्रसिद्ध थे, रखवाली करते रहे।

एक नरभक्षी राक्षस को पांडवों की मानुष-गंध ने विचलित कर दिया और उसने अपनी बहन हिडिम्बा को उन्हें पकडकर लाने के लिए भेजा। हिडिम्बा भीम को देखकर मोहित हो गई और एक सुंदर स्त्री के वेष में उसने भीम को विवाह का प्रस्ताव किया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

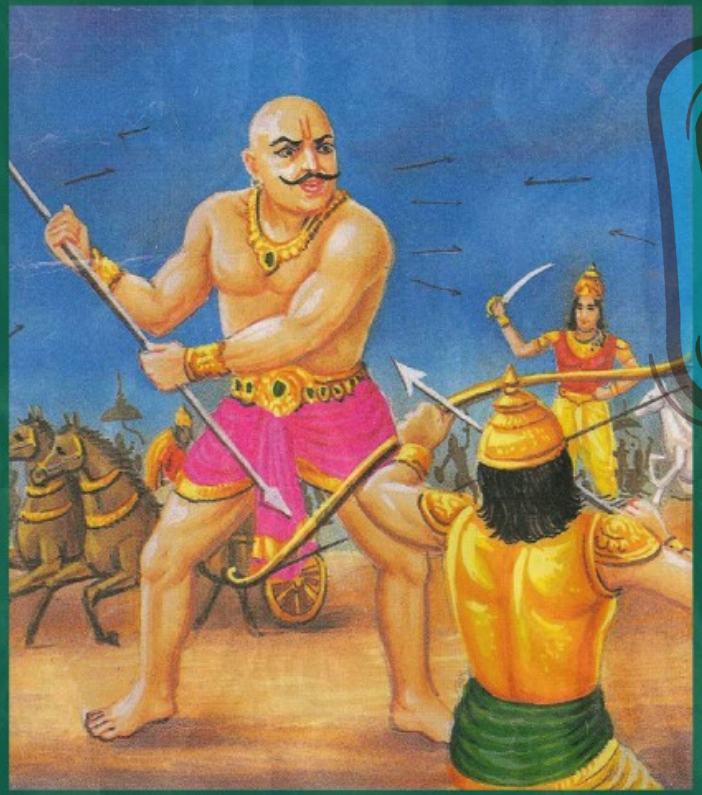

इस बीच राक्षस वहां आ गया और उसने भीम को मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। भीम ने उसकी चुनौती को स्वीकार किया और उसका वध कर दिया। शोर सुनकर अन्य पांडव जाग गये। हिडिम्बा ने उन्हें अपना परिचय दिया और भीम के प्रति अपने प्रेम से उन्हें अवगत कराया। वह कुंती से बोली।

"हे उत्तम देवी, मैंने मित्र, बान्धव और अपने धर्म का भी परित्याग कर दिया है और आपके बाघ सदृश पुत्र का अपने पति के रूप में चयन किया है.... चाहे आप मुझे मूर्ख समझें अथवा अपनी समर्पित दासी, कृपया मुझे अपने साथ लें तथा आपका पुत्र मेरा पति हो।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. हिडिम्बा कौन थी ?

Q. भीम किन शर्तों पर हिडिम्बा से शादी के लिए तैयार हुआ ?

Q. पाडवों को वन क्यूँ भेजा ?

अंततः युद्धिष्ठिर इस शर्त पर इस विवाह के लिए तैयार हो गए कि भीम दिनभर हिडिम्बा के साथ रहकर रात्रि में उनके पास आ जायेंगे।

यह दंपति दिनभर सभी लोकों की सैर करते। समय आने पर हिडिम्बा ने एक राक्षस पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम घटोत्कच रखा। तत्पश्चात् मां और पुत्र पांडवों को छोड़कर वन में चले गये किंतु घटोत्कच ने यह प्रण किया कि जब भी पांडवों को उसकी जरूरत होगी वह उपस्थित हो जायेगा।

कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि राक्षस उन लोगों को कहा जाता था जिनके आचार-व्यवहार उन मानदंडों से भिन्न थे जिनका चित्रण ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुआ था।

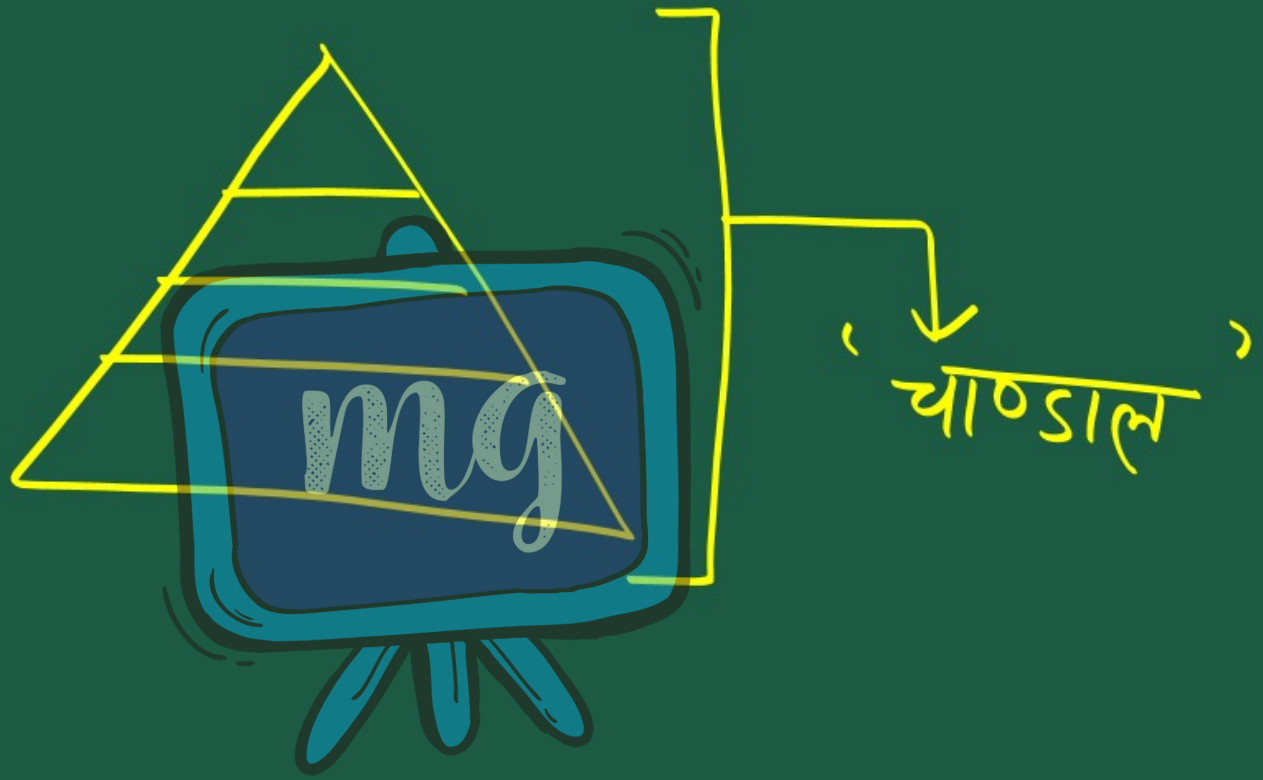
mg
चाण्डाल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चार वर्णों से परे : अधीनता और संघर्ष

- ब्राह्मण कुछ लोगों को वर्ण व्यवस्था वाली सामाजिक प्रणाली के बाहर मानते थे। साथ ही उन्होंने समाज के कुछ वर्गों को 'अस्पृश्य' घोषित कर सामाजिक वैषम्य को और अधिक प्रखर बनाया।
- ब्राह्मणों का यह मानना था कि कुछ कर्म खासतौर से वे जो अनुष्ठानों के संपादन से जुड़े थे, पुनीत और पवित्र थे, अतः अपने को पवित्र मानने वाले लोग अस्पृश्यों से भोजन नहीं स्वीकार करते थे।
- पवित्रता के इस पहलू के ठीक विपरीत कुछ कार्य ऐसे थे जिन्हें खासतौर से 'दूषित' माना जाता था। शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वालों को चाण्डाल कहा जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मनुस्मृति में चाण्डालों के लिए निर्धारित कर्तव्यों का समालोचनात्मक परिक्षण करें?



- इन्हें वर्ण व्यवस्था वाले समाज में सबसे निम्न कोटि में रखा जाता था। वे लोग जो स्वयं को सामाजिक क्रम में सबसे ऊपर मानते थे, इन चाण्डालों का स्पर्श, यहां तक कि उन्हें देखना भी, अपवित्रकारी मानते थे।
- मनुस्मृति में चाण्डालों के 'कर्तव्यों' की सूची मिलती है। उन्हें गांव के बाहर रहना होता था। वे फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करते थे, मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनते थे। रात्रि में वे गांव और नगरों में चल फिर नहीं सकते थे। संबंधियों से विहीन मृतकों की उनहें अंत्येष्टि करनी पड़ती थी तथा वधिक के रूप में भी कार्य करना होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- चीन से आये बौद्ध-भिक्षु फा-शियन (500 ई.) का कहना है कि अस्पृश्यों को सड़क पर चलते हुए करताल बजाकर अपने होने की सूचना देनी पड़ती थी जिससे अन्य जन उन्हें देखने के दोष से बच जायें।
- एक अन्य चीनी यात्री ह्वेन-त्सांग (लगभग 700 ई.) का कहना है कि वधिक और सफाई करने वालों को नगर से बाहर रहना पड़ता था।
- अब्राह्मणीय ग्रंथों में चित्रित चाण्डालों के जीवन का विश्लेषण करके इतिहासकारों ने यह जानने का प्रयास किया है कि क्या चाण्डालों ने शास्त्रों में निर्धारित अपने हीन-जीवन को स्वीकार कर लिया था?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



यदा-कदा इन ग्रंथों के चित्रण और ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुए चित्रण में समानता है और कभी कभी एक भिन्न सामाजिक वास्तविकता का संकेत मिलता है।

Q. वर्ण से आप क्या समझते हैं?

Q. पितृवादियों के व्यवस्था की विशेषता बताईये?

Q. प्राचीन भारत की वर्ण व्यवस्था पर प्रकाश डालें?

Q. महाभारत की भाषा सामग्री की चर्चा करें?

Q. व्याख्या किजिए की आप कैसे सिद्ध करेंगें की महाभारत ग्रंथ गतिशील था?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पैसा ↑ प्रतिष्ठा ↑

पैसा ↓ प्रतिष्ठा ↓



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जन्म के परे



संसाधन और प्रतिष्ठा :-

यदि हम आर्थिक संबंधों पर विचार करें तो देखेंगे कि दास, भूमिहीन खेतीहर मज़दूर, शिकारी, मछुआरे, पशुपालक, किसान, ग्राम मुखिया, शिल्पकार, वणिक और राजा सभी का उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक-अभिनायक के रूप में उद्भव हुआ।

उनके सामाजिक स्थान इस बात पर निर्भर करते थे कि आर्थिक संसाधनों पर उनका कितना नियंत्रण है।

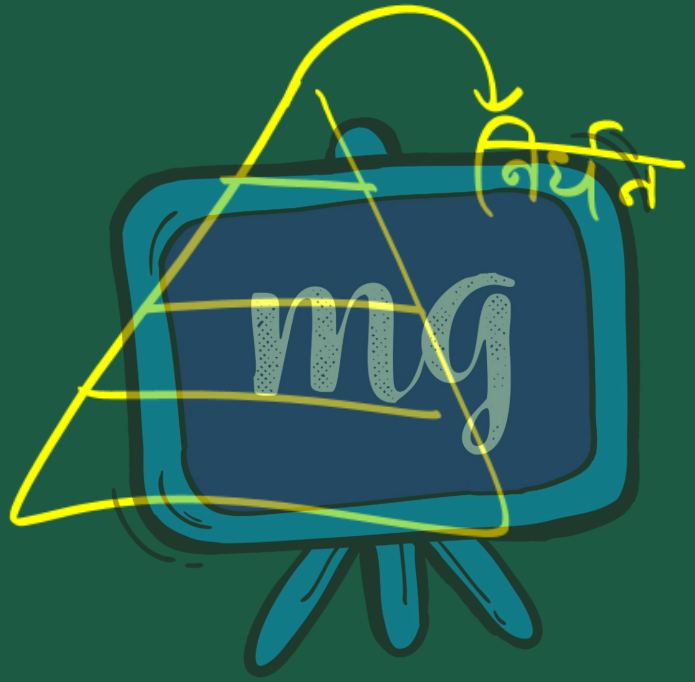
निर्देश
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



संपत्ति पर स्त्री और पुरूष के भिन्न अधिकार :-

महाभारत के एक महत्वपूर्ण प्रकरण पर विचार करते हैं.....

कौरव और पांडव के बीच लंबे समय से चली आ रही प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप दुर्योधन ने युधिष्ठिर को द्यूत क्रीडा के लिए आमंत्रित किया।

युधिष्ठिर अपने प्रतिद्वन्द्वी द्वारा धोखा दिये जाने के कारण इस द्यूत में स्वर्ण, हस्ति, रथ, दास, सेना, कोष, राज्य तथा अपनी प्रजा की संपत्ति, अनुजों और फिर स्वयं को भी दाँव पर लगा कर गँवा बैठे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इसके उपरांत उन्होंने पांडवों की सहपत्नी द्रोपदी को भी दाँव पर लगाया और उसे भी हार बैठे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

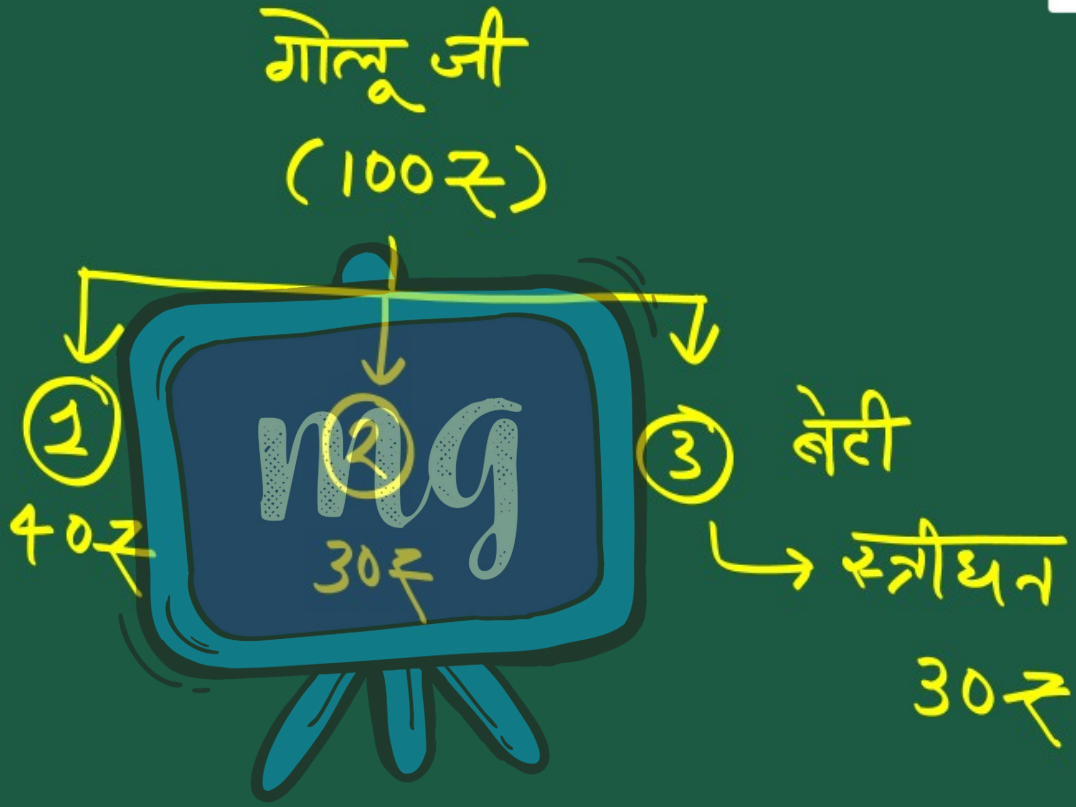

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पैतृक जायदाद

पुत्रों के बीच समान वितरण

ज्येष्ठ पुत्र ↑



- संपत्ति के स्वामित्व के मुद्दे जो इन कहानियों से वर्णित है, धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्रों में भी उठाये गये हैं।
- मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायजाद का माता-पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए किंतु ज्येष्ठ पुत्र विशेष भाग का अधिकारी था। स्त्रियां इस पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की मांग नहीं कर सकती थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

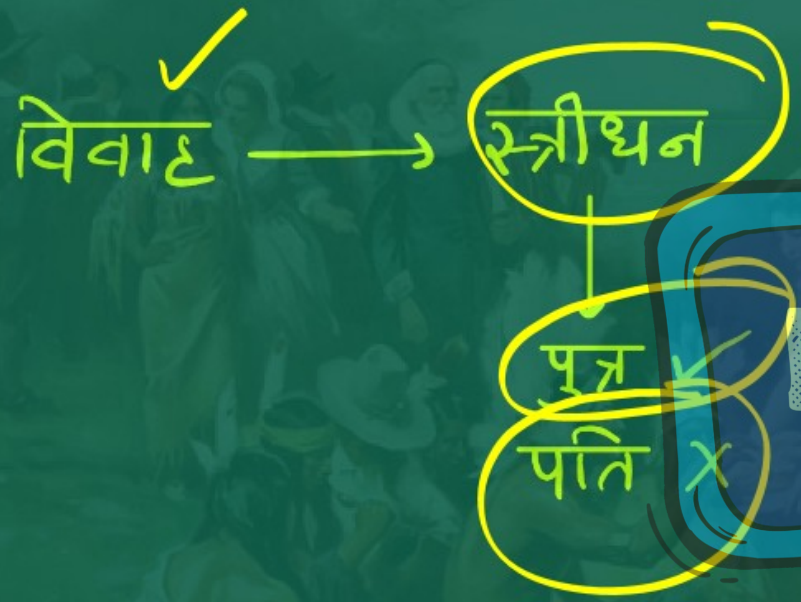

- किंतु विवाह के समय मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व माना जाता था और इसे स्त्रीधन (स्त्री का धन) की संज्ञा दी जाती थी। इस संपत्ति को उसकी संतान विरासत के रूप में प्राप्त कर सकती थी और इस पर उसके पति का कोई अधिकार नहीं होता था।
- किंतु मनुस्मृति स्त्रियों को पति की आज्ञा के विरूद्ध पारिवारिक संपत्ति या स्वयं अपने बहुमूल्य धन के गुप्त संचय के विरूद्ध भी चेतावनी देती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- एक धनाढ्य वाकाटक-महिषी प्रभावती गुप्त के साथ-साथ अनेक अभिलेखीय व साहित्यिक-साक्ष्य इशारा करते हैं कि उच्च वर्ग की महिलाऐं तो संसाधनों पर अपनी पैंठ रखती थी जबकि सामान्यतः भूमि, पशु व धन पर पुरूषों का ही नियंत्रण था।
- इसलिए स्त्री और पुरूष के बीच सामाजिक हैसियत की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता की वजह से ही ज्यादा प्रखर हुई।

मनुस्मृति

सदी



- विरासत
- खोज
- खरीद
- विजित
- निवेश
- कार्य
- सज्जनों





- वैवाहिक अग्नि
- वधुगमन
- पिता
- माता
- भ्राता
- पति

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्राचीन काल में पैतृक संसाधनों का वितरण किस प्रकार किया जाता था?

भारत में धन अर्जित करने के तरीकों पर चर्चा करें?

स्त्रीधन क्या होता था?

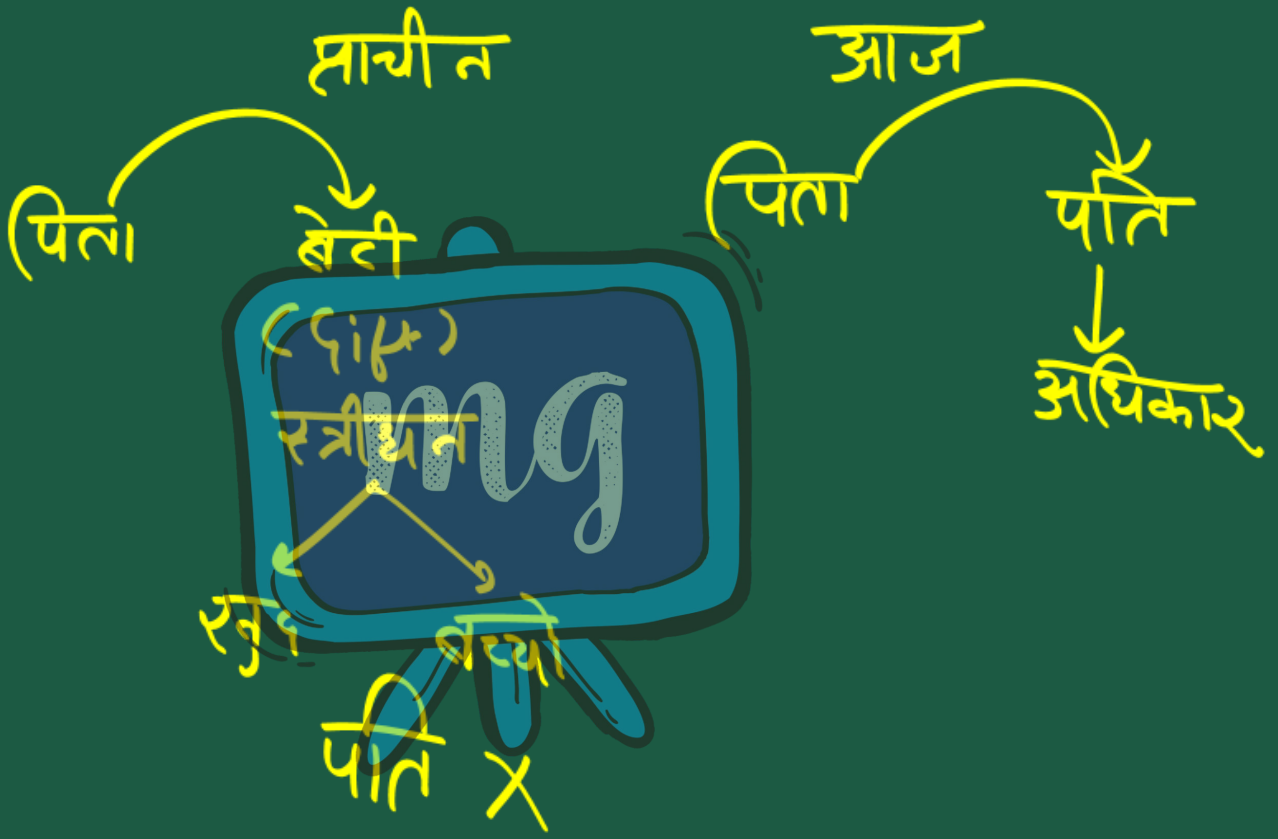
प्राचीन
पिता
बेटी
(पिता)
स्त्रीधन
पति
आज
पिता
पति
अधिकार
पति X

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

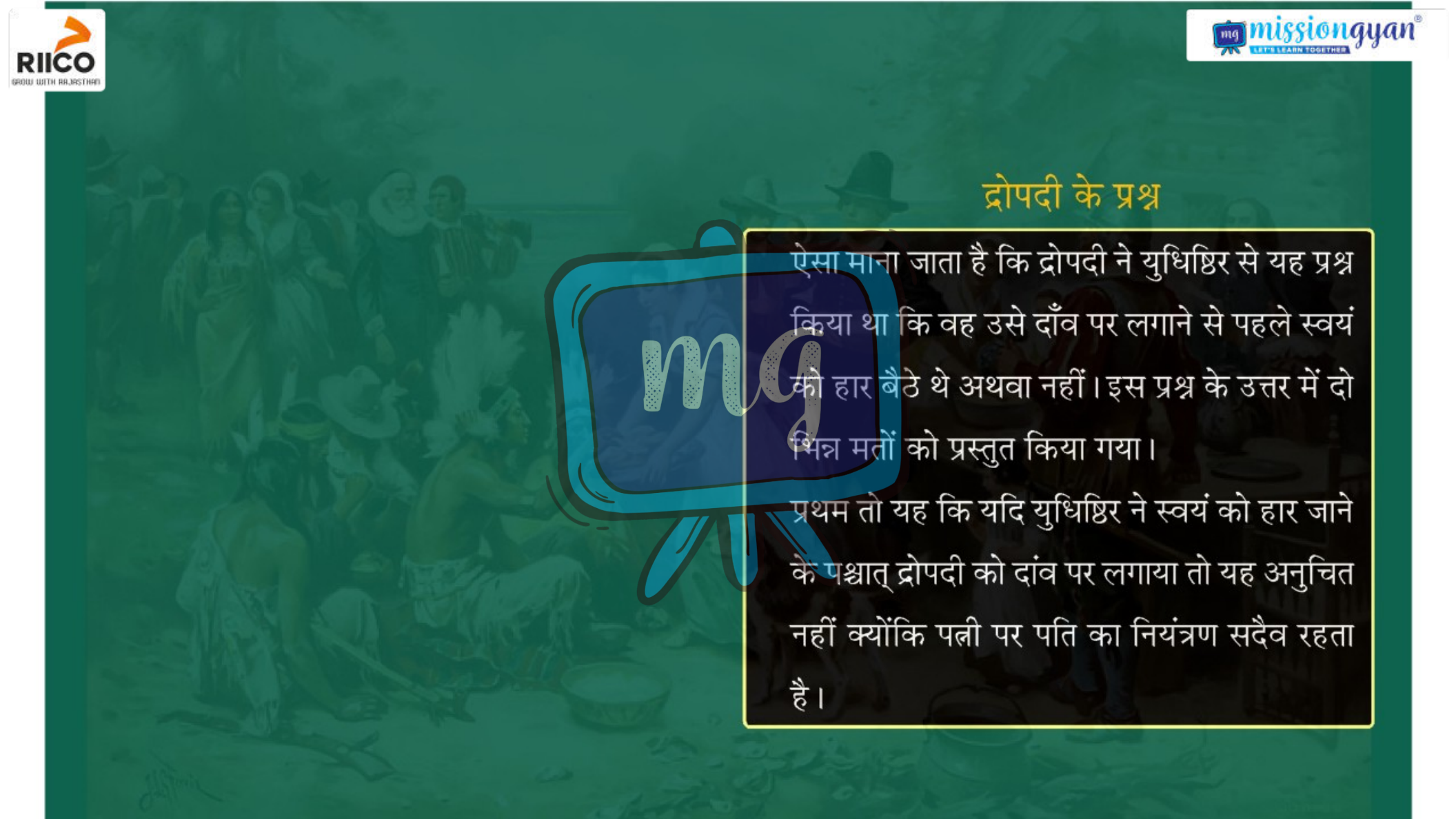

द्रोपदी के प्रश्न

ऐसा माना जाता है कि द्रोपदी ने युधिष्ठिर से यह प्रश्न किया था कि वह उसे दाँव पर लगाने से पहले स्वयं को हार बैठे थे अथवा नहीं। इस प्रश्न के उत्तर में दो भिन्न मतों को प्रस्तुत किया गया।

प्रथम तो यह कि यदि युधिष्ठिर ने स्वयं को हार जाने के पश्चात् द्रोपदी को दांव पर लगाया तो यह अनुचित नहीं क्योंकि पत्नी पर पति का नियंत्रण सदैव रहता है।

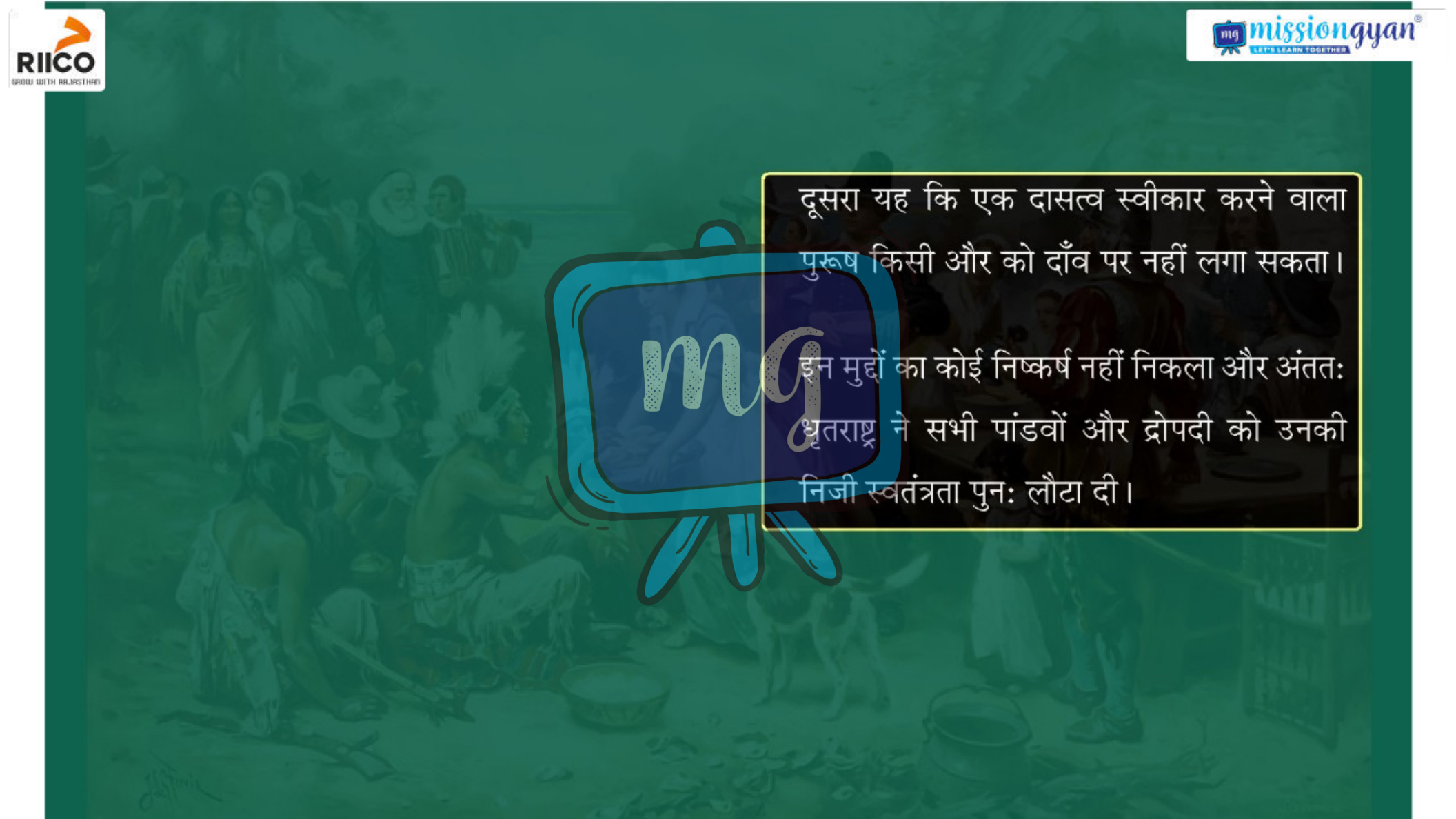

दूसरा यह कि एक दासत्व स्वीकार करने वाला पुरूष किसी और को दाँव पर नहीं लगा सकता।

इन मुद्दों का कोई निष्कर्ष नहीं निकला और अंततः धृतराष्ट्र ने सभी पांडवों और द्रोपदी को उनकी निजी स्वतंत्रता पुनः लौटा दी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्ण और संपत्ति के अधिकार :-

- ब्राह्मणीय ग्रंथों के अनुसार संपत्ति पर अधिकार का एक और आधार वर्ण था। (लैंगिक आधार के अतिरिक्त)
- शूद्रों के लिए एकमात्र 'जीविका' ऐसी सेवा थी जिसमें हमेशा उनकी इच्छा शामिल नहीं होती थी।
- हालांकि तीनों उच्च वर्णों के पुरूषों के लिए विभिन्न जीविकाओं की संभावना रहती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- यदि इन सब विधानों को वास्तव में कार्यान्वित किया जाता है तो ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे धनी व्यक्ति होते।
- यह कुछ हद तक वास्तविकता से मेल भी खाता है साहित्यिक परम्पराओं में पुरोहितों और राजाओं का वर्णन मिलता है जिसमें राजा अधिक धनी चित्रित होते थे। पुरोहित भी सामान्यतः धनी दर्शाये जाते हैं। हालांकि यदा-कदा निर्धन ब्राह्मण का भी चित्रण मिलता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्णभेद की आलोचना –

एक ओर जहां समाज के ब्राह्मणीय दृष्टिकोण को धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में संहिताबद्ध किया जा रहा था वहीं अन्य परम्पराओं ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना प्रस्तुत की।

इनमें सर्वविदित आलोचनाऐं प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में (600 ई. पू. से) विकसित हुई।

- बौद्धों ने इस बात को अंगीकार किया कि समाज में विषमता मौजूद थी किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थाई रहेंगे।
- बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

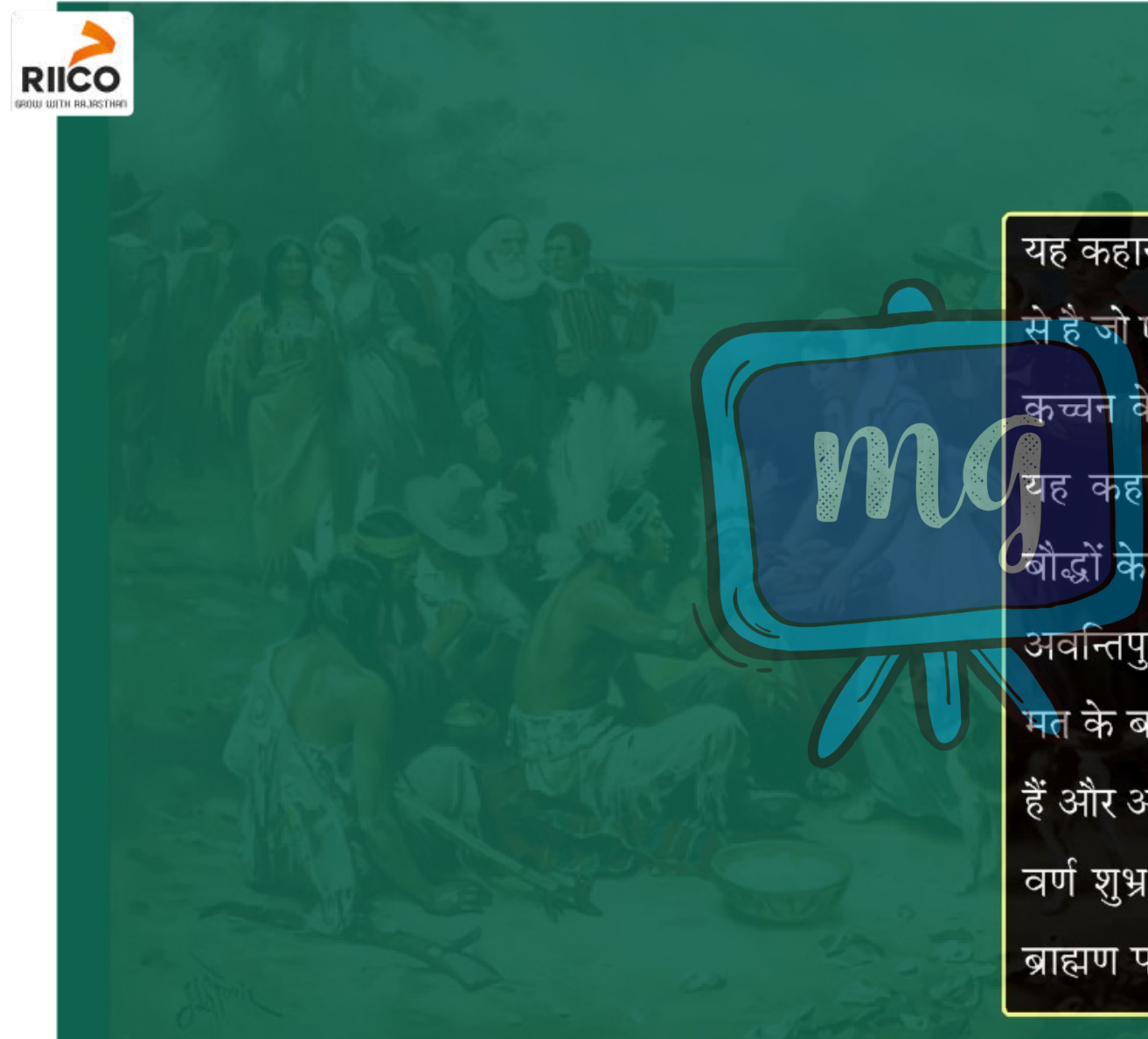

एक धनाढ्य शूद्र

यह कहानी पालि भाषा के बौद्ध ग्रंथ मज्झिमनिकाय से है जो एक राजा अवन्तिपुत्र और बुद्ध के अनुयायी कच्चन के बीच हुए संवाद का हिस्सा है। यद्यपि यह कहानी अक्षरशः सत्य नहीं थी तथापि यह बौद्धों के वर्ण संबंधी रवैये को दर्शाती है।

अवन्तिपुत्र ने कच्चन से पूछा कि ब्राह्मणों के इस मत के बारे में उनकी क्या राय है, कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं और अन्य जातियां निम्न कोटि की हैं, ब्राह्मण का वर्ण शुभ्र है और अन्य जातियां काली हैं, केवल ब्राह्मण पवित्र हैं, अन्य नहीं, ब्राह्मण ब्रह्मा के पुत्र

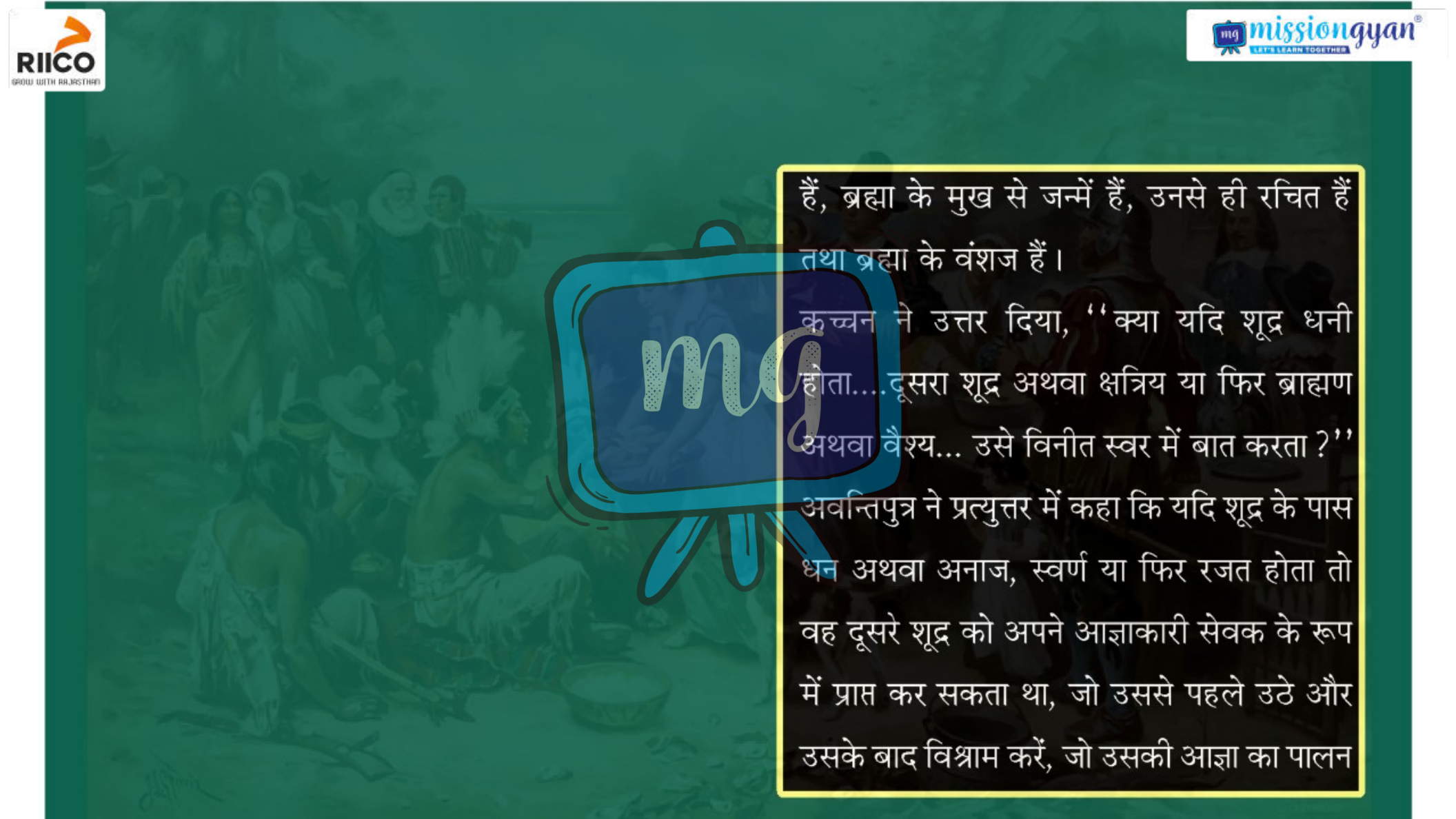

हैं, ब्रह्मा के मुख से जन्में हैं, उनसे ही रचित हैं तथा ब्रह्मा के वंशज हैं।

कच्चन ने उत्तर दिया, ''क्या यदि शूद्र धनी होता....दूसरा शूद्र अथवा क्षत्रिय या फिर ब्राह्मण अथवा वैश्य... उसे विनीत स्वर में बात करता?''

अवन्तिपुत्र ने प्रत्युत्तर में कहा कि यदि शूद्र के पास धन अथवा अनाज, स्वर्ण या फिर रजत होता तो वह दूसरे शूद्र को अपने आज्ञाकारी सेवक के रूप में प्राप्त कर सकता था, जो उससे पहले उठे और उसके बाद विश्राम करें, जो उसकी आज्ञा का पालन

Q. क्या महाभारत मे पुरुष व स्त्रीयों के संपत्ति के अधिकार समान थे?

Q. वर्ग भेद की आलोचना स्पष्ट किजिए?

करें, विनीत वचन बोले अथवा वह क्षत्रिय, ब्राह्मण या फिर वैश्य को भी आज्ञावाही सेवक बना सकता था।

कच्चन ने पूछा, ''यदि ऐसा है तो क्या फिर चारों वर्ण एकदम समान नहीं है?''

अवन्तिपुर ने यह स्वीकार किया इस आधार पर चारों वर्णों में कोई भेद नहीं है।

जिसके पास संसाधन हैं वही प्रतिष्ठित है।